IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनपद भदोही के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के भावात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

सतीश कुमार द्विवेदी
डॉ० आर०के० यादव

शोध सार

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध प्रपत्र में परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के भावात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया है सम्बन्धित अध्ययन के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अर्न्तगत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोधकर्ता द्वारा शोध कार्य हेतु डा0 एस के मंगल एवं डा0 शुभ्रा मंगल के संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया है। उक्त परीक्षण के द्वारा भावात्मक बुद्धि से सम्बन्धित समस्त आकड़े एकत्रित किए गए हैं। उपलब्धि परीक्षण से सम्बन्धित आकडों को एकत्रित करने के लिए स्व निर्मितउपलब्धि परीक्षण मापनी का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में 10 परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 5 में पढ़ने वाले 600 बच्चों को लिया गया है। अध्ययन के लिए तीन परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। शोध अध्ययन के बाद निष्कर्ष रूप में पाया गया कि प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओंके भावनात्मक स्तर में कोई अन्तर नहीं होता अर्थात प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर में एकरूपता पायी गयी। प्राथमिक स्तर के बच्चों के भावात्मक बुद्धि और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के भावनात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध है। इस तरह छात्र–छात्राओं शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन से यह ज्ञात होता है छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध है। इस तरह भावनात्मक बुद्धि के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि छात्र–छात्राओं के भावनात्मक बुद्धिमें सार्थक अन्तर नहीं है। जबकी छात्र–छात्राओं शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन से और भावनात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि इनमें सार्थक अन्तर है।

शब्द कुंजी– जनपद भदोही, प्राथमिक विद्यालय, भावात्मक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना

मनुष्य एक समाजिक प्राणी है प्राचीनकाल से ही वह अपनी सुरक्षा एवं विभिन्न आवश्यकताओं के लिए समूहों में रहना प्रारम्भ कर दिया था। जिसके परिणाम स्वरूप कालान्तर में समाज का निर्माण हुआ। समाज में रहते हुये समाज के साथ अनुकूलन स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक होता है। जिसके लिये समाज के अनुरूप व्यवहारों में परिवर्तन करना जरूरी होता है व्यक्ति के व्यवहारों में यह परिवर्तन शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति के व्यवहारों को परिमार्जित कर उसे समाज में स्थापित कर सकता है। राज्य द्वारा दी जाने वाली शिक्षा में अनौपचारिक शिक्षा वह माध्यम है जो समाज की आवश्कताओं की पूर्ति करता है जिसके द्वारा बालकों में वही परिवर्तन किए जाते हैं जो समाज द्वारा मान्य है। इस शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा भी कहते है। जिसके द्वारा व्यक्ति समाज से सामंजस्य स्थापित कर पाता है। विद्यालयी शिक्षा के द्वारा ही बालक में सामाजिक गुणों का विकास कर उसे समाज के योग्य बनाया जाता है। अतः यह हम स्पष्ट रूप से कह सकते है कि शिक्षा की प्राप्ति के लिए विद्यालय एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा प्राप्त करने के लिये बालकों को सर्वप्रथम प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश कराया जाता है। हमारे देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय प्राथमिक शिक्षा की दशा अत्यन्त दयनीय थी। प्राथमिक शिक्षा किसी भी देश के विकास की आधारशिला होती है। प्राथमिक शिक्षा को आधारभूत शिक्षा भी कहते हैं। स्वतंत्रता के समय राष्ट्र की मूलभूत समस्याओं में सें एक समस्या जनतंत्र के प्रति नागरिकों को जागरूक बनाना, साथ ही राष्ट्र को समृद्ध बनाना था। यह कार्य आधारभूत शिक्षा (प्राथमिक शिक्षा) स्तर से ही किया जाना था जिससे देश में नए सिरे से निरक्षरता न बढ़ने पाए।

पहले यह माना जाता था कि व्यक्ति के शैक्षिक विकास में मानसिक बुद्धि का ही महत्वपूर्ण योगदान है। लेकिन बाद के अध्ययनों से पता चला कि मानसिक बुद्धि से अधिक व्यक्ति के शैक्षिक विकास में भावात्मक बुद्धि का योगदान है अर्थात बालक के विकास को अच्छी तरह से समझने के लिए मानसिक बुद्धि के साथ–साथ उसके भावात्मक बुद्धि को भी समझना जरूरी है। भावात्मक बुद्धि अर्थात अपने भवनाओं को समझने के साथ–साथ दूसरे के भवनाओं को समझने और परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता। भावात्मक बुद्धि का बालक के शैक्षिक उपलब्धि से भी गहरा सम्बन्ध है। अच्छी भावात्मक बुद्धि वाले बालकों की शैक्षिक उपलब्धि और परिस्थितियों से समायोजन करने की क्षमता भी अच्छी होती है।

अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के भावात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। भावात्मक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि के लिए कितना आवश्यक है यह जानने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन में उच्च एवं निम्न भावात्मक बुद्धि वाले बालकों में पाये जाने वाले अन्तर को समझने का प्रयास किया गया है।

शोध की आवश्यकता को हम निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट कर सकते है –

1. प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का भावनात्मक स्तर ज्ञात कर उचित मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया जा सकेगा
2. प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के भावात्मक बुद्धि का सही दिशा में उपयोग हो सकेगा।

3. प्राथमिक स्तर पर पढ़ने वाले विद्यार्थियों के समायोजन की समस्याओं का पता लगेगा।

4. प्राथमिक स्तर पर पढ़ने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का पता लगेगा।

कठिन शब्दों का परिभाषीकरण

जनपद भदोही

भदोही शब्द भरद्रोही का अपभ्रंश है 'भदोही' प्राचीन काल में लगभग 400 साल पूर्व 'भर राज्य' के नाम से जाना जाता था। जिसके शासक भर थे। जिनको जयपुर से आए 'मौन' गोत्रिय कछवाहा वंश के 'मौनस' राजपूतों ने जो अपने को 'राम' के पुत्र 'कुश' का वंशज मानते हैं पराजित कर भरद्रोही या भदोही की स्थापना की थी। वर्तमान समय में भदोही भारत के राज्य उत्तर प्रदेश का एक जिला है। भदोही जिले का मुख्यालय ज्ञानपुर है। इस जनपद का निर्माण 30 जून 1994 को उत्तर प्रदेश राज्य के 65 वें जिले के रुप में हुआ था। भदोही जिला पहले वाराणसी जिले का भाग हुआ करता था यह जिला वर्तमान समय में मिर्जापुर संभाग के अन्तर्गत आने वाले तीन जिलों में से एक है।

प्राथमिक विद्यालय

प्राथमिक विद्यालय वह निर्धारित स्थान है जहाँ पर प्राथमिक शिक्षा दी जाती है। नई शिक्षा नीति– 2020 के अनुसार प्राथमिक विद्यालय वह स्थान है जहाँ 5+3 की शिक्षा दी जाती है अर्थात नर्सरी + एल०के०जी० + यू०के०जी० + कक्षा–1 + कक्षा–2 के साथ कक्षा–3, कक्षा–4 एवं कक्षा–5 की शिक्षा दी जाती है। सरल शब्दों में कहे तो 3 वर्ष से 11 वर्ष की शिक्षा जहाँ प्राप्त की जाती है उसे प्राथमिक विद्यालय कहते है।

भावनात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा की तरफ शिक्षा शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों का ध्यान व्यापक रूप से ले जाने का श्रेय डेनियल गोलमैन को है । उन्होने 1995 मे एक पुस्तक प्रकाशित की Emotional Intelligence-Why it Can matter more than IQ जिसने संवेगात्क बुद्धि की अवधारणा को व्यापक पहचान दिया था। भावनात्मक बुद्धि अर्थात भावनाओं और बुद्धि का संयोग जिसमें व्यक्ति हृदय एवं मष्तिक को मिलाकर कोई निर्णय लेता है और अपने एवं दूसरों की भावनाओं को समझने का प्रयास करता है। परिस्थितियों से समायोजन स्थापित करता है। जहां बुद्धि का संबंध व्यक्ति के संज्ञानात्मक पक्ष से होता है वही भावनात्मक पक्ष का संबंध व्यक्ति की भवनाओं से होता है। भावना आंतरिक व बाह्या दोनो तरह के उद्दीपकों का परिणाम होती है।

शैक्षिक उपलब्धि

किसी भी शिक्षण विषय में व्यक्ति की उपलब्धि को ही शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं शैक्षिक उपलब्धि का मापन उपलब्धि परीक्षण के द्वारा किया जाता है इसके द्वारा छात्रों की उपलब्धियों के बारे में जानकारी मिलती है कि वह कौन से विषय में कमजोर है जिसमें सुधार की आवश्यकता है तथा कौन से विषय में ठीक है जिसको लेकर आगे अपनी पढ़ाई जारी रख सकता है। शैक्षिक उपलब्धि यह मापन करता है कि छात्रों को कक्षा में पढाए गये विषयों का कितना ज्ञान हुआ जिसमें संपूर्ण पाठ्यक्रम से प्रश्न किए जाते है और सही प्रश्नों के लिए अंक दिए जाते है उसका योग किया जाता है उसके बाद जो प्राप्तांक प्राप्त होता है उसके आधार पर कोई निर्णय लिया जाता है।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भावनाओं को समझना ।
2. भावनात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का पता लगाना।
3. उच्च एवं निम्न भावनात्मक बुद्धि वाले बालकों में अन्तर को पता करना।

परिकल्पना

H01- प्राथमिक स्तर के विद्यालय के छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर में कोई अंतर नहीं होता है।

H02- प्राथमिक स्तर के विद्यालय के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं होता है।

H03- प्राथमिक स्तर के बच्चों के भावात्मक बुद्धि और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

अध्ययन की रूप रेखा–

1. छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर का अध्ययन।
2. छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।
3. छात्र–छात्राओं के भावात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन।

शोध की विधि–

प्रस्तुत शोध की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोध कर्ता ने शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा 10 प्राथमिक स्कूलों के विगत 4 वर्षो के कुल 600 बच्चों का न्यादर्श के रुप में शोध के लिये चयन किया गया। संख्या अधिक होने के कारण प्रत्येक सत्र से 20 प्रतिशत विद्यार्थियों का ही चयन किया गया जिसमें 320 छात्राएँ और 280 छात्र थे।

शोध में प्रयुक्त उपकरण–

1. भावात्मक बुद्धि मापनी– डा0 एस के मंगल एवं शुभ्रा मंगल
2. उपलब्धि परीक्षण मापनी– स्वनिर्मित

सांख्यिकीय विधियां–

प्राप्त सूचनाओं के विश्लेषण एवं विवेचनात्मक अध्ययन के लिए उचित सांख्यिकीय विधियों मध्यमान, मानक विचलन एवं t मूल्य का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

प्रस्तुत शोध के उददेश्यों की प्राप्ति हेतु निम्न लिखित सारणियों को वर्गीकृत किया गया है।

- **छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर का अध्ययन**

तालिका –1.0

क्रम संख्या	वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t मूल्य	सार्थकता स्तर
1	छात्राओं का भावनात्मक स्तर	300	126.95	11.7	–24.25	असार्थक
2	छात्रों का भावनात्मक स्तर	250	117.25	12.4		

गणना के पश्चात t का प्राप्त मान –24.25 रहा जो 0.05 स्तर एव 0.01 स्तर दोनो से निम्न है इसलिए असार्थक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना "प्राथमिक स्तर के विद्यालय के छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर में कोई अंतर नहीं होता है" स्वीकृत की जाती है इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के भावनात्मक स्तर में एकरूपता पायी जाती है अतः शोधार्थी ने गणनोपरान्त पाया कि प्राथमिक स्तर पर

अध्ययनरत छात्र– छात्राओं में भावनात्मक रूप से विभिन्नता नही पायी जाती है। सम्बन्धित आँकड़ो का विवरण उपरोक्त तालिका संख्या –1.0 में दिया गया है।

➢ छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

तालिका –1.1

क्रम संख्या	वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t मूल्य	सार्थकता स्तर
1	छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि	250	209.92	34.72	2.95	सार्थक
2	छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि	300	209.30	47		

गणना के पश्चात t का प्राप्त मान 2.95 रहा जो 0.05 स्तर एवं 0.01 स्तर दोनो से अधिक है इसलिए सार्थक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना " प्राथमिक स्तर के विद्यालय के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं होता है।" अस्वीकृत की जाती है इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पायी जाती है अतः शोधार्थी ने गणनोपरान्त पाया कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में शैक्षिक रूप से विभिन्नता पायी जाती है। निष्कर्ष रूप में छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि छात्रों से अच्छी पायी गयी। सम्बन्धित आँकड़ो का विवरण उपरोक्त तालिका संख्या –1.1 में दिया गया है।

➢ छात्र–छात्राओं के भावात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध काअध्ययन

तालिका –1.2

क्रम संख्या	वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t मूल्य	सार्थकता स्तर
1	उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की संख्या	260	258.9	27.72	42.42	सार्थक
2	निम्न भावनात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की संख्या	240	169.81	17.71		

अध्ययनोपरान्त क्रान्तिक अनुपात t के लिए गणना का कार्य किया गया गणना के पश्चात प्राप्त मान 42.42 रहा, गणनोपरान्त प्राप्त मान 42.42, t तालिका मूल्य के 0.05 स्तर एवं 0.01 स्तर दोनो से अधिक है। इसलिए दोनो स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना "प्राथमिक स्तर के बच्चों के भावात्मक बुद्धि और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में कोई सम्बन्ध नहीं होता है" अस्वीकृत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के भावनात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध है। शोधार्थी ने अध्ययन के दौरान पाया कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत 52 % बालकों की भावनात्मक बुद्धि औसत से उपर थी। जिन बालकों की भावनात्मक बुद्धि औसत से उपर थी उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी थी। शिक्षक से पूछने पर पता चला की ये बालक पढने में तेज, सहयोगात्मक प्रवृति के और अतिरिक्त विद्यालयी क्रियाकलापों में बढ–चढ कर भाग लेने वाले हैं। इसी तरह प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत 48 % बालकों की भावनात्मक बुद्धि औसत से नीचे थी। ऐसे बालकों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले छात्रों की अपेक्षा कम पायी गयी अर्थात उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत निम्न भावनात्मक बुद्धि वाले बच्चों के बहुत अच्छी थी। उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले बच्चे प्रश्नों को हल करते समय अपनी सूझ का प्रयोग कर रहे थे एवं वे काफी शान्त और गम्भीर थे। वहीं निम्न भावनात्मक बुद्धि वाले बच्चों में गम्भीरता एकाग्रता एवं सूझ का आभाव था। अतः शोधार्थी ने अध्ययन के दौरान यह पाया कि भावात्मक बुद्धि का व्यक्ति के जीवन में बहुत ही महत्व है एक अच्छी भावनात्मक बुद्धि वाला बालक अपने भावनाओं के साथ–साथ दूसरे की भवनाओं को अच्छे से समझ पाता है। परिस्थितियों से अच्छे से समायोजन कर पाता है, ऐसे बच्चे पढने लिखने भी काफी अच्छे होते हैं।

निष्कर्ष एवं व्याख्या

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध प्रपत्र में परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के भावात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया है प्रपत्र से सम्बन्धित समस्त प्रदत्तों के संग्रहण, विश्लेषण और गणना सम्बन्धी कार्य के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुआ उसकी व्याख्या निम्नवत है–

शोध निष्कर्ष में शोधार्थी ने पाया कि प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का भावनात्मक स्तर समान है। शोध परिणाम छात्र–छात्राओं में भावनात्मक रूप से एकता को दर्शाता है। **तालिका –1.0।**

अध्ययनोपरान्त प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र– छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया अतः शोधार्थी ने गणनोपरान्त पाया कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में शैक्षिक रूप से विभिन्नता पायी जाती है। निष्कर्ष रूप में छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि छात्रों से अच्छी पायी गयी। **तालिका –1.1।** इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के भावनात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध है। जिन बालकों की भावनात्मक बुद्धि औसत से उपर थी उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी थी **तालिका –1.2।**

सामाजिक उपादेयता

इस शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि बच्चों की अच्छी संवेगात्मक बुद्धि का उनके शिक्षा एवं समायोजन पर धनात्मक प्रभाव पडता है। एक अच्छी संवेगात्मक बुद्धि बालकों की शैक्षिक उपलब्धि को धनात्मक रूप से प्रभावित करते हुए समाज के विकास में योगदान देती है। यह शोध अध्ययन निष्कर्ष रूप में यह बताता है कि समाज में छात्र–छात्राओं की शिक्षा पर समान रूप से बल दिया जाए।

इस शोध अध्ययन से निष्कर्ष रूप में यह स्पष्ट होता है कि बालकों को अपनी संवेगात्मक बुद्धि का प्रयोग कर जीवन में आगे बढने का अवसर दिया जाए ऐसी स्थिति में बालक की शैक्षिक उपलब्धि स्वतः अच्छी होगी तथा बालकों में पाए जाने वाले अपव्यय व अवरोधन की समस्या का भी समाधान हो जाएगा और समाज को अच्छे डॉक्टर, इंजिनियर, वकील, वैज्ञानिक, प्रशासनिक अधिकारी और नेतृत्व करता भी मिल सकेंगे जिससे समाज का सर्वांगीण विकास होगा।

सुझाव

शोधार्थी द्वारा भावी अध्ययन हेतु जो सुझाव दिए गए हैं वह निम्नवत है –

1. इस प्रकार का अध्ययन भदोही जिले के अतिरिक्त देश के अन्य जिलों में भी किया जाना चाहिए।

2. इस तरह का अध्ययन स्कूल/कालजों के प्रत्येक स्तर–उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उत्तर माध्यमिक, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय प्रत्येक स्तर पर होना चाहिए।

3. इस प्रकार का अध्ययन समाज के प्रत्येक वर्ग– सामान्य पिछडी अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों पर अलग–अलग किया जाना चाहिए।

4. इस तरह के अध्ययन में भावात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के साथ अन्य चरों को भी लिया जा सकता है।

7.इस तरह का अध्ययन अंग्रेजी एवं हिन्दी दोनो माध्यम से पढने वाले बालकों पर अलग–अलग किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. पाण्डेय, के0पी0 : शैक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा

2. डॉ मंगल, यश के0 डॉ मंगल, उमा : विद्यार्थी अधिगम एवं संज्ञान

3. डॉ शर्मा, आर0ए0 : शिक्षा में अनुसंधान

4. श्याम आनन्द : "शिक्षा शास्त्र"

5. प्रो0 गुप्ता, एस0पी0 डॉ गुप्ता, अलका : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन

6. डॉ शर्मा, आर0ए0 डॉ चतुर्वेदी, शिखा : "निर्देशन एवं परामर्श के मूल तत्व"

7. डॉ पाठक, पीडी : शिक्षा मनोविज्ञान

8. डॉ सारस्वत, मालती : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation